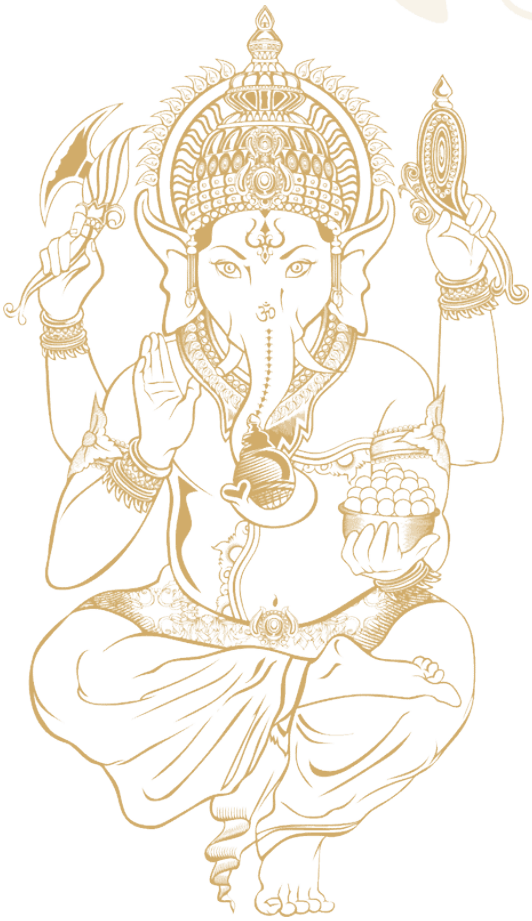

Mr. Sanskar

Ms. Trapti

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120621101

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120621101 Date: 19/12/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
20-21/05/2005	जन्म तिथि	29/10/2008
शुक्र-शनिवार	दिन	बुधवार
घंटे 02:45:00	जन्म समय	08:00:00 घंटे
घटी 52:33:14	जन्म समय(घटी)	03:43:33 घटी
India	देश	India
Ujjain	स्थान	Dhar
23:11:00 उत्तर	अक्षांश	22:32:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	75:24:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:28:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:43:42	सूर्योदय	06:31:35
19:03:27	सूर्यास्त	17:52:33
23:55:49	चित्रपक्षीय अयनांश	23:59:00
मीन	लग्न	वृश्चिक
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
कन्या	राशि	तुला
बुध	राशि-स्वामी	शुक्र
चित्रा	नक्षत्र	स्वाति
मंगल	नक्षत्र स्वामी	राहु
2	चरण	3
व्यतिपात	योग	प्रीति
बालव	करण	किंस्तुघ्न
पो-पौरुष	जन्म नामाक्षर	रो-रोहिणी
वृष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
वैश्य	वर्ण	शूद्र
मानव	वश्य	मानव
व्याघ्र	योनि	महिष
राक्षस	गण	देव
मध्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	मृग

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506,7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 4वर्ष 6मा 23दि		10:21:26	मीन	लग्न	वृश्चि	00:52:01	राहु 8वर्ष 7मा 19दि	
राहु		06:00:29	वृष	सूर्य	तुला	12:03:31	गुरु	
13/12/2009		27:58:19	कन्या	चंद्र	तुला	13:36:10	18/06/2017	
13/12/2027		20:20:00	कुंभ	मंगल	तुला	23:07:36	18/06/2033	
राहु	25/08/2012	20:52:35	मेष	बुध	कन्या	25:45:20	गुरु	06/08/2019
गुरु	19/01/2015	15:21:25	कन्या व	गुरु	धनु	22:25:55	शनि	17/02/2022
शनि	25/11/2017	19:13:34	वृष	शुक्र	वृश्चि	18:31:21	बुध	25/05/2024
बुध	13/06/2020	29:29:54	मिथु	शनि	सिंह	24:21:53	केतु	01/05/2025
केतु	02/07/2021	28:24:17	मीन	राहु व	मक	20:53:27	शुक्र	31/12/2027
शुक्र	01/07/2024	28:24:17	कन्या	केतु व	कर्क	20:53:27	सूर्य	18/10/2028
सूर्य	26/05/2025	16:34:47	कुंभ	हर्ष व	कुंभ	25:06:46	चन्द्र	17/02/2030
चन्द्र	25/11/2026	23:40:23	मक व	नेप व	मक	27:29:24	मंगल	24/01/2031
मंगल	13/12/2027	29:51:50	वृश्चि व	प्लूटो	धनु	05:09:16	राहु	18/06/2033

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:55:49 चित्रपक्षीय अयनांश 23:59:00

लग्न-चलित

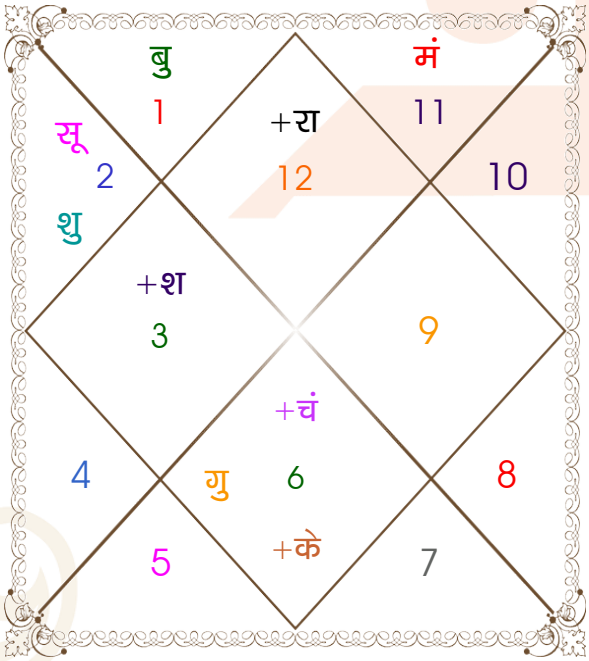

लग्न-चलित

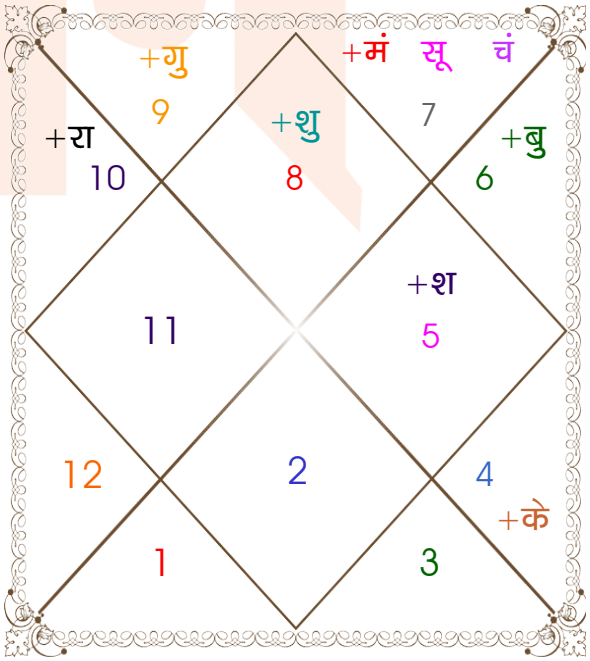

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506,7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	महिष	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

कुल : **21 / 36**

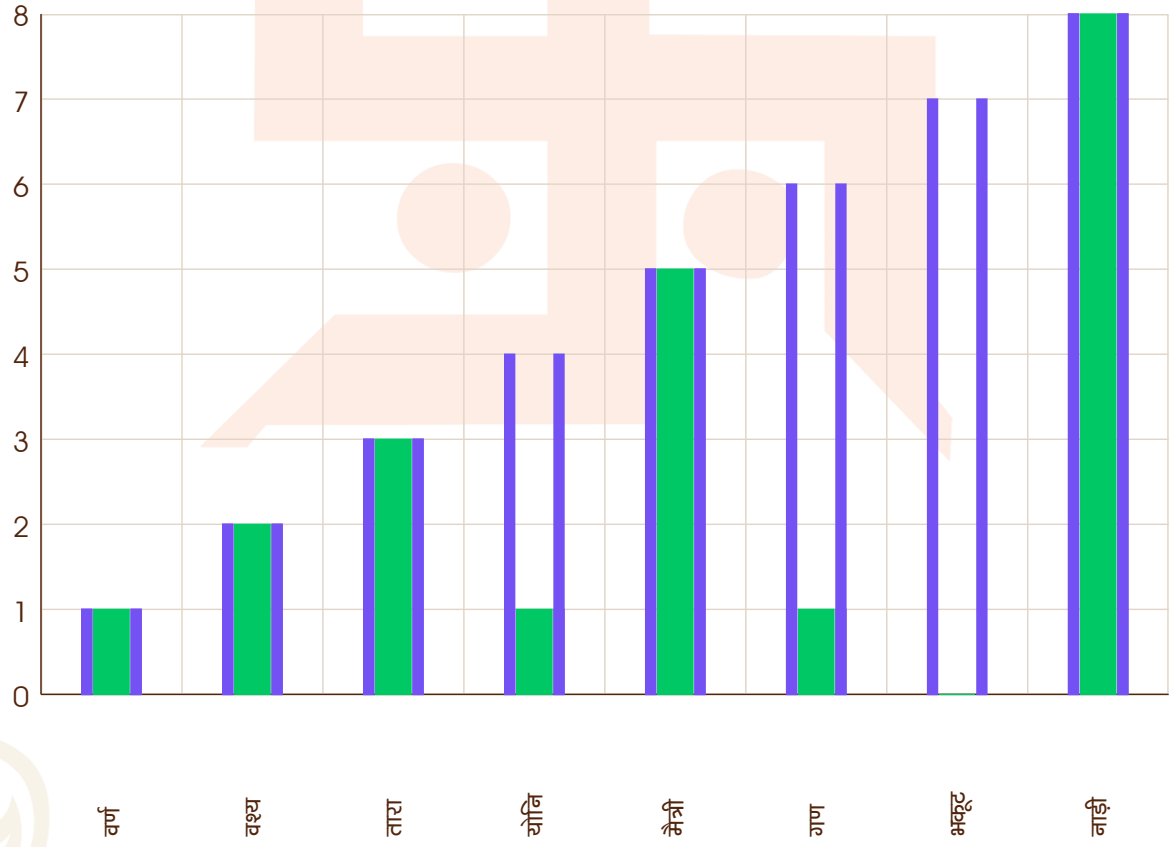

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506,7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतर्णे दांत का वर्ग मूषक है तथा डेण ज्तंचजप का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतर्णे दांत और डेण ज्तंचजप का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डतर्णे दांत मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

डेण ज्तंचजप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण ज्तंचजप कि कुण्डली में द्वादश भाव में तुला राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र डेण ज्तंचजप कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेण ज्तंचजप कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतर्णे दांत तथा डेण ज्तंचजप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डतण्ैदेंत का वर्ण वैश्य है तथा डेण ज्तंचजप का वर्ण शूद्र है। इसमें डेण ज्तंचजप का वर्ण डतण्ैदेंत के वर्ण से नीचा है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप डेण ज्तंचजप अति आज्ञाकारी, सहायता करने वाली तथा बिना किसी शिकायत के पूरे परिवार की सेवा-सुश्रुषा एवं देखभाल करने वाली होगी। साथ ही हर किसी की सेवा के लिए डेण ज्तंचजप हमेशा तत्पर रहेगी। बिना उचित कारण के वह किसी के साथ तर्क-वितर्क अथवा झगड़ा नहीं करेगी।

वश्य

डतण्ैदेंत का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं डेण ज्तंचजप का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। डतण्ैदेंत एवं डेण ज्तंचजप दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

डतण्ैदेंत की तारा अतिमित्र तथा डेण ज्तंचजप की तारा सम्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। साथ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली साबित होंगे। डतण्ैदेंत हमेशा डेण ज्तंचजप के साथ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं सफल होंगे।

योनि

डतण्ैदेंत की योनि व्याघ्र है तथा डेण ज्तंचजप की योनि महिष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र

की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डतण्ॅदेंत एवं डेण ज्तंचजप दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि डतण्ॅदेंत एवं डेण ज्तंचजप के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण डतण्ॅदेंत एवं डेण ज्तंचजप जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

डतण्ॅदेंत का गण राक्षस तथा डेण ज्तंचजप का गण देव है। अर्थात डेण ज्तंचजप का गण डतण्ॅदेंत के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण डतण्ॅदेंत निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही डतण्ॅदेंत का डेण ज्तंचजप के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। डेण ज्तंचजप हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

डतण्ॅदेंत से डेण ज्तंचजप की राशि द्वितीय भाव में स्थित है तथा डेण ज्तंचजप से डतण्ॅदेंत की राशि द्वादश भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके कारण डतण्ॅदेंत गुस्सैल एवं लड़ाकू स्वभाव के हो सकते हैं। साथ ही शारीरिक रूप से कमजोर तथा अपव्ययी होंगे। डेण ज्तंचजप समझौतावादी, सौम्य एवं दयालु प्रवृत्ति की होंगी तथा अपने कर्त्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों को आसानी से बखूबी निभाती रहेंगी तथा बचत भी करती रहेगी। दूसरी ओर डतण्ॅदेंत शाहखर्च, लापरवाह एवं अय्याशी में पैसे बर्बाद करने वाले हो सकते हैं।

नाड़ी

डतण्ॅदेंत की नाड़ी मध्य है तथा डेण ज्तंचजप की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह जीवन के लिए आवश्यक दो महत्वपूर्ण अवयवों का समन्वय है। अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ काया एवं अच्छे यौन जीवन के लिए वात, पित्त एवं कफ का शरीर में संतुलन आवश्यक है। जिसके कारण डतण्ॅदेंत एवं डेण ज्तंचजप के बीच साहचर्य, सुख एवं

समृद्धि की वृद्धि तथा उन्हें अच्छे, स्वस्थ एवं आज्ञाकारी संतान प्रदान होगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

डतण्ैदेंत की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या तथा डेण ज्तंचजप की राशि वायुतत्व युक्त तुला राशि है। पृथ्वी तथा वायु तत्व में विषमता होने के कारण डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप के मध्य यदा कदा अनावश्यक मतभेद उत्पन्न होंगे परन्तु सामंजस्य की प्रवृति होने के कारण इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः मिलान सामान्य से अच्छा रहेगा।

डतण्ैदेंत की राशि का स्वामी बुध तथा डेण ज्तंचजप की राशि का स्वामी शुक्र परस्पर मित्र भावों में पड़ते है। अतः इसके शुभ प्रभाव से डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप का दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा तथा परस्पर संबधों में भी मधुरता रहेगी। एक दूसरे के गुणों की ये प्रशंसा करेंगे तथा सच्चे मित्र की भांति कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही परस्पर प्रेम सहानुभूति सहयोग तथा समर्पण की भावना विद्यमान होगी तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

डतण्ैदेंत एवं डेण ज्तंचजप की जन्म राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से यदा कदा डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप के मध्य परस्पर विवाद एवं मतभेद उत्पन्न होंगे तथा आर्थिक स्थिति में भी विषमता रहेगी जिससे संबधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा परन्तु यदि ये धैर्य एवं सामंजस्य की प्रवृति से कार्य लें तो इन्का जीवन सुख पूर्वक व्यतीत हो सकता है।

डतण्ैदेंत एवं डेण ज्तंचजप दोनों का वश्य मानव है। अतः इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं समान होंगी। साथ ही दाम्पत्य संबधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

डतण्ैदेंत का वर्ण वैश्य तथा डेण ज्तंचजप का वर्ण शूद्र है। अतः डतण्ैदेंत की प्रवृति धनार्जन सम्बन्धी कार्यों में रहेगी परन्तु डेण ज्तंचजप किसी पूर्व चुनाव के परिश्रम एवं ईमानदारी से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी। अतः कार्य क्षेत्र में स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

धन

डेण ज्तंचजप की तारा सम्पत तथा डतण्ैदेंत की तारा अतिमित्र है। इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। डेण ज्तंचजप धनवान एवं भाग्यवान होंगी तथा डेण ज्तंचजप के सौभाग्य से डतण्ैदेंत की आर्थिक स्थिति नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेगी। डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप दोनों की राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में स्थित है जो भकूट दोष माना जाता है। लेकिन मंगल का आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव सम रहेगा। अतः सामान्यतया डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप समृद्ध एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे।

भकूट दोष के प्रभाव से डेण ज्तंचजप की प्रवृति अत्यधिक व्ययशील होगी तथा

भौतिक साधनों में वह काफी व्यय करेंगी लेकिन उनकी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा समस्त सुखों का उपभोग करते हुए इनका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

स्वास्थ्य

डतण्ैदेंत की नाड़ी मध्य तथा डेण ज्तंचजप की नाड़ी अन्त्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में जन्म होने के कारण नाड़ी दोष के प्रभाव से मुक्त रहेंगे अतः गंभीर शारीरिक कष्ट से सुरक्षित रहेंगे लेकिन मंगल का दोनों के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव नहीं रहेगा। इससे दोनों गुप्त या धातु संबंधी रोगों से परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही संभोग क्रिया में भी दोनों शिथिलता तथा उदासीनता प्रदर्शन का करेंगे जिससे दाम्पत्य जीवन के सुख में अल्पता की अनुभूति होगी। इसके अतिरिक्त डेण ज्तंचजप के गर्भपात की भी संभावना रहेगी। अतः उपरोक्त अशुभ प्रभावों में न्यूनता करने के लिए डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप दोनों को हनुमान की उपासना, मंगलवार के उपवास तथा मूंगा आदि धारण करना चाहिए। इससे अशुभ प्रभावों में न्यूनता तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में डेण ज्तंचजप के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन डेण ज्तंचजप को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में डेण ज्तंचजप को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार डतण्ैदेंत और डेण ज्तंचजप का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डेण ज्तंचजप के सास के साथ संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। साथ ही आयु में

पर्याप्त अन्तर होने के कारण इन के मध्य अनावश्यक मतभेद रहेंगे। लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता से व्यवहार करेंगे तो संबधों में मधुरता की वृद्धि होगी तथा तनाव में न्यूनता आएगी।

ससुर से भी डेण ज्तंचजप को इच्छित स्नेह तथा सहानुभूति अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी। अतः डेण ज्तंचजप को चाहिए कि ससुर की सेवा, सुख सुविधा तथा आराम का पूर्ण ध्यान रखें। इससे उनसे स्नेह के भाव में वृद्धि हो सकती है। लेकिन देवर तथा ननदों के साथ डेण ज्तंचजप के संबध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर सार्थक सामंजस्य का भाव रहेगा तथा मित्रता पूर्ण व्यवहार करके उनसे स्नेह तथा सहानुभूति को प्राप्त करेंगी। इन संबधों से डेण ज्तंचजप सास ससुर से भी इच्छित स्नेह की प्राप्ति करने में समर्थ हो सकती है इस प्रकार ससुराल में इनका जीवन सामान्यतया सुखी ही रहेगा।

ससुराल-श्री

डतण ैदेंत की सास से संबधों में मधुरता बनी रहेगी तथा आपसी सामंजस्य के कारण एक दूसरे के प्रति स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा तथापि यदा कदा संबधों में औपचारिकता के भाव का भी समावेश रहेगा। उनके मध्य मतभेदों की न्यूनता रहेगी। अतः समय समय पर डतण ैदेंत सपत्नीक ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन डतण ैदेंत ससुर के साथ मधुर संबधों में नित्य वृद्धि करने में समर्थ रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य एवं बुद्धिमता से इनके मध्य अपनत्व का भाव बना रहेगा तथा समय समय पर उनसे इन्हें उपयोगी सलाह भी मिलती रहेगी। इसके अतिरिक्त साले एवं सालियों से भी मित्रतापूर्ण संबध रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। इस प्रकार ससुराल के लोगों का डतण ैदेंत के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रहेगा तथा सास को छोड़कर अन्य लोगों से अनौपचारिक संबध रहेंगे। फलतः वे इनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा अपना वांछित सहयोग समय समय पर प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।